वैविध्यपूर्ण भारतीय संस्कृति

एक अवलोकन

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

वैविध्यपूर्ण भारतीय संस्कृति

एक अवलोकन

सम्पादक

डॉ0 धीरज सिंह

विभागाध्यक्ष, शिक्षा शास्त्र विभाग,

मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,

मोहन नगर, गाजियाबाद।

नमूना • SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित



अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल–9ए, प्रथम तल, गली न0 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली–110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

वैविध्यपूर्ण भारतीय संस्कृति
एक अवलोकन

संस्करण : 2021
© सम्पादक
ISBN: 978-81-948850-2-3

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक एवं सम्पादक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा आरना इंटरप्राइजेज, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE



समर्पण

हमारी प्रेरणा के स्रोत व हमारे आदर्श
कर्तव्यनिष्ठ व सजग शिक्षक
पूज्य पिताजी यशःशेष **श्री विनय कुमार सिंह**
एवं
धर्मनिष्ठ, उदार हृदया, ममतामयी
प्रातः स्मरणीय पूजनीय माताजी
श्रीमती रामराजी सिंह
को सादर, साभार समर्पित।

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

सम्पादकीय

मनुष्य एक बुद्धिमान, विवेकशील और संवेदनशील प्राणी है। उसकी संवेदना, विवेकशीलता, विचारशक्ति और नवसृजन की क्षमता उसे अन्य प्राणियों से अलग स्थान प्रदान करती है। यही वह गुण हैं जो मनुष्य को सर्वोत्तम ईश्वरीय कृति बनाते हैं। अपनी इन विशिष्टताओं के आधार पर उसने मानवीय विकास को गति प्रदान की। विकास के नित नए प्रतिमानों को गढ़ते हुए उसने एक व्यवस्थित जीवन शैली, परम्पराओं, रीति–रिवाज, धर्म, दर्शन, विचारधारा, खान–पान, नृत्य–संगीत, गायन–वादन, साहित्य, कला आदि की समृद्ध परम्पराएं विकसित की जो आगे चलकर नई पीढ़ी के लिए विरासत बनी। मनुष्य के इन्हीं मानसिक व वैचारिक सृजन को संस्कृति का नाम दिया जाता है।

संस्कृति किसी मानवीय समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों का समग्र रूप है, जो उस समाज के सोचने, विचार व कार्य करने, खान–पान, बोली–भाषा, नृत्य–संगीत, गायन–वादन, साहित्य, कला, वास्तु आदि में परिलक्षित होती है। संस्कृति मानवीय समाज के भौतिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा आध्यात्मिक अभ्युदय हेतु मानव की श्रेष्ठ साधनाओं, सम्यक् चेष्टाओं और संतुलित व्यवहार की समष्टिगत अभिव्यक्ति है। यह मनुष्य के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के स्वरूप का निर्माण, निर्देशन, निर्धारण, नियमन और नियंत्रण करती है। इस प्रकार संस्कृति मनुष्य की जीवन पद्धति, वैचारिक दर्शन एवं सामाजिक क्रियाकलाप में उसे उसके समष्टिवादी दृष्टिकोण की अभिव्यंजना है।

संस्कृति का विकास सम्पूर्ण मानवीय समाज का सचेतन, सतत व क्रमिक विकास है। संस्कृति हमारे पूर्वजों के हजारों वर्षों के वैचारिक अनुष्ठान का संचित कोष है। संस्कृति सम्पूर्ण मानवीय समाज के विकास

का दर्पण है। यह मानवीय विकास की सतत व अनवरत यात्रा है। इस प्रकार संस्कृति हमारे सम्पूर्ण जीवन की विधि है जो हमें विरासत के रूप में हमारे पूर्वजों से मिली है।

भारत का सांस्कृतिक विकास पांच हजार वर्षों से अधिक की क्रमिक, सतत व अनथक यात्रा है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम, समृद्धतम और महानतम संस्कृतियों में से एक है। विश्व की अनेक उन्नत संस्कृतियाँ समय के साथ सर्वोच्चता के शिखर पर विराजमान हुईं, किन्तु काल के प्रवाह से न बच पाईं और पतनोन्मुख होकर नष्ट हो गईं। भारतीय संस्कृति ही विश्व की एकमात्र ऐसी संस्कृति है जो अपने प्रारम्भ काल से अनवरत चलती रही है। इसके प्रवाह की गति कभी नहीं रुकी। इसी लिए भारतीय संस्कृति को सदानीरा व सदाजीवा संस्कृति जैसे विशेषणों से नवाजा जाता है।

भारतीय संस्कृति एक अथाह समुद्र की भाँति है जिसने विश्व की अनेक संस्कृतियों को अपने में विलीन किया है। प्रकृति के साथ सन्तुलन स्थापित कर आगे बढ़ने वाली भारतीय संस्कृति, जिसके मूल में पर्यावरण संरक्षण, विश्व बंधुत्व का भाव व सर्वकल्याण की मंगल कामना निहित है, अपने सहिष्णुता, समन्वयकारिता, सहनशीलता, समानता, सभी को सम्मान, सहकारिता, सह अस्तित्व, सर्व स्वीकार्यता आदि जैसे गुणों के कारण भारत ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व के लिए सदैव ही सार्थक, महत्वपूर्ण व प्रासंगिक रही है।

आज विश्व में जिस प्रकार की परिस्थितियां बनी हैं, उन परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति की महत्ता और प्रासंगिकता और बढ़ी है। आज सम्पूर्ण विश्व भारतीय संस्कृति की ओर आशा भरी निगाहों से देख रहा है। भारतीय संस्कृति की स्वीकार्यता और ग्राह्यता चाहे–अनचाहे विश्व में बढ़ रही है। इसके साथ ही खेद का विषय है कि भारतीय युवा अभी भी पश्चिम की चकाचौंध भरी भौतिकवादी संस्कृति का मोह छोड़ नहीं पा रहे हैं। आज भारतीय समाज उपभोक्तवाद की जकड़ में है। ऐसी परिस्थिति में प्रत्येक भारतीय का यह कर्तव्य है कि वह भारतीय संस्कृति को जाने–समझे और अपने जीवन में आत्मसात करे। साथ

ही आने वाली पीढ़ी में उन संस्कारों को डाले जिससे भावी भारतीय पीढ़ी भारतीय संस्कृति की महत्ता को स्वीकार करे और अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत पर गर्व कर सके।

आज आवश्यकता है भारतीय समाज में पुनः भारतीय संस्कृति के प्रचार–प्रसार की। भारतीय युवाओं को पाश्चात्य संस्कृति का मोह त्याग कर भारतीय संस्कृति को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना होगा। प्रत्येक भारतीय को चाहिए कि वह अपनी आने वाली पीढ़ी को भारतीय संस्कृति से अवगत कराते हुए उन्हें भारतीय संस्कृति पर आधारित जीवन शैली अपनाने हेतु प्रेरित करें। भारतीय संस्कृति पर आधारित यह प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में एक लघु प्रयास मात्र है। "वैविध्यपूर्ण भारतीय संस्कृति : एक अवलोकन" शीर्षक से प्रकाशित होने जा रही यह पुस्तक भारतीय संस्कृति पर आधारित है। इस पुस्तक में कुल 23 आलेखों का संकलन है, जो देश के विभिन्न प्रांतो से शोध छात्रों, शिक्षाविदों और शिक्षकों द्वारा प्रेषित किए गए हैं। सच्चे अर्थों में यह पुस्तक भारतीय संस्कृति की परिचायक होगी क्यों कि इस पुस्तक में भारत के सभी भागों के विद्वतजनों ने अपने आलेख के माध्यम से अपना योगदान दिया है। यह पुस्तक भारतीय संस्कृति के सहयोग की समृद्ध परंपरा का एक उदाहरण साबित होगी।

ऐसे विषय पर पुस्तक सम्पादन का कार्य करते हुए मैं अपने को सौभाग्य शाली अनुभव कर रहा हूँ। इस पुस्तक में मेरा कुछ नहीं है। इस पुस्तक के सम्पादकत्व द्वारा मैं भारतीय संस्कृति पर विभिन्न क्षेत्र के विद्वानों के भावों व विचारों को लोगों तक पहुँचाने का मात्र एक माध्यम हूँ। अवश्य ही यह पुस्तक भारतीय संस्कृति के अध्येताओं और शोधार्थियों को भारतीय संस्कृति की झलक प्रस्तुत करने में उपयोगी व सहायक सिद्ध होगी।

निश्चित रूप से पारिवारिक दायित्वों को पूर्ण करते हुए पुस्तक का सम्पादन कार्य कठिन था। बिना पारिवारिक सहयोग के यह कार्य संभव नहीं था। मैं अपनी पत्नी रेनू सिंह, सात वर्षीय पुत्र अद्वैत सिंह और पांच वर्षीय पुत्र अथर्व सिंह के प्रति सदैव कृतज्ञ रहूँगा कि मुझे

इस कार्य हेतु सहयोग, समय और मानसिक सम्बल प्रदान किया। हृदय से उनको आभार सहित सप्रेम धन्यवाद।

अपने आलेख के माध्यम से सहयोग देने के लिए सभी विद्वान शिक्षक साथियों, शिक्षाविदों एवं शोधार्थियों को धन्यवाद और आभार। विभिन्न्न लेखकों के भारतीय संस्कृति के विषय में अभिव्यक्त इन विचारों को पुस्तकाकार रूप देने के लिए अखंड पब्लिशिंग हाउस का भी धन्यवाद एवं आभार।

संपादक
डॉ0 धीरज सिंह
विभागाध्यक्ष, शिक्षाविभाग,
मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज,
मोहननगर, गाजियाबाद।

नमूना • SAMPLE

डॉ0 गायत्री सिंह

प्राचार्य,
आर्मापुर पी0 जी0 कॉलेज,
कानपुर।



भूमिका

संस्कृति हमारे जीवन जीने की विधि है, पूर्णता की ओर बढ़ने और समुन्नत विकास का माध्यम है। यह हमारी मानसिक व आध्यात्मिक सर्जना का अभिव्यक्त रूप है। संस्कृति किसी राष्ट्र या समाज की वह अमूल्य निधि है जो हमारे पूर्वजों के युग–युगांतर के अनवरत अध्यवसाय, प्रयोग, अनुभवों एवं सृजनशीलता का परिणाम है और जो हमें एक समृद्ध विरासत के रुप में पूर्वजों से प्राप्त है। संस्कृति मानव जीवन का आधारभूत स्रोत और प्रेरणा का पुंज है।

भारतीय संस्कृति विश्व कल्याण की संस्कृति है जो वसुधैव कुटुंबकम के उद्घोष के साथ सम्पूर्ण विश्व को एक सूत्र में पिरोने के लिए सदा प्रयत्नशील रही है। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु' निरामया की लोक मंगल की कामना से अभिप्रेरित भारतीय संस्कृति वैश्विक शांति के आदर्श का मूल मन्त्र लेकर सदा आगे बढ़ी है।

भारतीय संस्कृति मानवीयता मूलक समाज की आधारशिला, नियामक, निर्धारक व मार्गदर्शक है। भारतीय संस्कृति ने सदा सहकारिता, सहिष्णुता, सहअस्तित्व, पारस्परिक स्नेह व भाईचारा, करुणा, समानता, सम्मान, सर्व कल्याण और लोकमंगल की कामना का मार्ग प्रशस्त किया है। भारतीय संस्कृति ने भौगोलिक सीमाओं, भाषा, धर्म, समुदाय, सम्प्रदाय व जाति आदि के बंधनों से परे रह कर मानवीय जीवन शैली का मार्ग प्रशस्त किया।

FREE SAMPLE

भारतीय संस्कृति मानव की वैचारिक व मानसिक सर्वोत्कृष्टता का परिचायक है। भारतीय संस्कृति, भारतीय मनीषी परम्परा का मात्र भारतीय समाज के लिए ही नहीं वरन सम्पूर्ण विश्व समुदाय के लिए उच्चतम वैचारिक चिंतन का प्रतिफल है जो संकुचित मानसिकता, परम्परा और व्यवस्था को नकारती है। भारतीय संस्कृति प्राचीन भारतीय ऋषियों और मुनियों की उदार, विशाल, व्यापक, सम्यक, समतामूलक, व्यावहारिक व गरिमायुक्त दृष्टिकोण का परिचायक है।

भारतीय संस्कृति ने सदैव पाश्चात्य जगत सहित सम्पूर्ण विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया है। प्राचीन काल से ही भारत पूरी दुनिया में विश्वगुरु के रूप में जाना जाता रहा है। भारतीय संस्कृति की दृष्टि सदैव निष्पक्ष, निष्कपट, समतामूलक और सहअस्तित्व, समानता और भाईचारे की रही है। भारत के द्वार सदा सभी के लिए खुले रहे। भारत की सम्पन्नता और समृद्ध ज्ञान परम्परा ने सदैव वैश्विक जगत को परोक्ष रूप से निमंत्रित किया। कभी कोई धन लिप्सा लेकर आया तो कभी कोई ज्ञान लिप्सा लेकर। कभी कोई भारत के वैभव को लूटकर ले गया, तो कभी कोई यहीं बस गया। किन्तु भारतीय सनातन परम्परा ने कभी भी किसी को तिरस्कृत नहीं किया, सदैव सभी को मुक्त हृदय से स्वीकार करते हुए खुले मन से अपनाया। भारतीय संस्कृति ने सभी वाह्य प्रभाव और संस्कृति को स्वयं में आत्मसात कर लिया। भारतीय संस्कृति की समन्वयकारिता का ऐसा अद्भुत उदहारण विश्व में अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। यह भारतीय संस्कृति की उदार महानता का मात्र एक छोटा सा उदहारण है। भारतीय संस्कृति में ऐसी अनेक विलक्षण क्षमताएं हैं जो उसे महान से महानतम बनाती हैं।

आज कोरोना महामारी के कारण वैश्विक परिस्थितियां बिगड़ गई हैं। चारों ओर भय, तनाव और अशांति का वातावरण निर्मित हो गया है। सर्वत्र किंकर्तव्य विमूढ़ता व्याप्त हो है। अधिकतर व्यावसायिक गतिविधियां ठप्प हैं। लोगों को सामाजिक दूरी का अनुपालन करने के निर्देश दिए जा रहे हैं। पाश्चात्य जगत की चकाचौंध, भागदौड़, विलासितापूर्ण और व्यस्ततम जीवन शैली से वहां के लोगों का मोह टूट रहा है। आज सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत के लोग भारतीय संस्कृति की

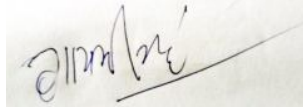
ओर उन्मुख हो रहे हैं। किन्तु दुर्भाग्य का विषय है कि भारतीय समाज अभी भी पाश्चात्य संस्कृति का मोह छोड़ नहीं पा रहा है। भारतीय युवा आज अपनी जड़ों से दूर जा रहा है। भारत की समृद्ध विरासत से आज भारतीय युवा अवगत नहीं है। जहाँ एक ओर सम्पूर्ण वैश्विक समाज भारतीय संस्कृति की महत्ता को स्वीकारते हुए उसका गुणगान कर रहा है, वहीं दूसरी ओर भारतीय युवा पाश्चात्य संस्कृति और उनकी जीवन शैली के मोह में आकंठ डूबा हुआ है। ऐसी परिस्थितियों में डॉ0 धीरज सिंह द्वारा "वैविध्यपूर्ण भारतीय संस्कृति : एक अवलोकन" शीर्षक से सम्पादित पुस्तक निश्चित रूप से वर्तमान भारतीय समाज के युवा वर्ग को भारतीय संस्कृति से अवगत कराने में सक्षम व सहायक होगी।

संस्कृति कोई प्राप्ति या उत्पाद नहीं बल्कि सतत संशोधन, संवर्द्धन और परिवर्तन की प्रक्रिया है। भारतीय संस्कृति की सार्थकता उसे अपने जीवन में उतारने और आत्मसात करने में है। आज प्रत्येक भारतीय को इसे पुनः समझने और व्याख्यापित करने की आवश्यकता है। डॉ0 धीरज सिंह द्वारा संकलित यह संचयिता इसी दिशा में एक बेहतर प्रयास है जिससे वर्तमान परिवर्तित परिस्थितियों में भारतीय संस्कृति की प्राचीन नियामक परम्पराओं, रीति–रिवाजों, जीवन शैली, मानदण्डों आदि को पुनः समझने और स्थापित करने में सहायता मिलेगी।

मैं डॉ0 धीरज सिंह को इस पुस्तक के कुशल सम्पादन के लिए शुभकामनाएं देती हूँ साथ ही उन सभी शोध आलेख प्रेषित करने वाले शिक्षकों, शिक्षाविदों और शोधार्थियों को भी शुभकामनाएं देती हूँ जिनके प्रयास से यह संकल्पना अपना मूर्त रूप पा रही है।

शुभकामनाओं और शुभाशीष सहित.....

विक्रम संवत 2077
अश्विन माह
शुक्ल पक्ष
प्रतिप्रदा
(17 / 10 / 2020)



डॉ0 गायत्री सिंह
प्राचार्य, आर्मापुर पी0 जी0 कॉलेज,
कानपुर।

नमूना • SAMPLE

सहायक सूची

1. **डॉ. धीरज सिंह**, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, मॉडर्न कॉलेज ऑफ प्रोफेशनल स्टडीज, मोहन नगर, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
2. **डॉ. अनामिका सिंह**, असिस्टेंट प्रोफेसर, ग्राम्यांचल महाविद्यालय, हैदरगढ़, बाराबंकी (उत्तर प्रदेश)।
3. **डॉ. समता सिंह,** टी0जी0टी0 हिन्दी विभाग, डी0पी0एस0 कल्यानपुर, कानपुर (उत्तर प्रदेश)।
4. **डॉ. रंजीत कुमार**, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, एल.आर.डी.ई, बेंगलूरु (कर्नाटक)।
5. **कुंवर कुलदीप चौहान**, शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, बाबासाहेब अम्बेडकर केंद्रीय विश्व विद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)।
6. **डॉ. हरिशंकर सिंह**, एसोसिएट प्रोफेसर, शिक्षा शास्त्र विभाग, बाबासाहेब अम्बेडकर केंद्रीय विश्व विद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश)।
7. **डॉ. अरूणा शर्मा**, एच.आई.सी.टी.शिक्षा विभाग, महाविद्यालय ग्वालियर (उत्तर प्रदेश)।
8. **डॉ. सुनीता साह**, सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग, श्री वेंकटेश्वमर कॉलेज ऑफ साइंस एंड मैनेजमेंट स्टडीज, के.आर.पुरम, बेंगलूरु (कर्नाटक)।
9. **डॉ. बबिता सिंह**, चौ0 चरण सिंह पी0 जी0 कॉलेज, हेंवरा, इटावा (उत्तर प्रदेश)।
10. **डॉ. नवीन अग्रवाल**, सहायक प्रोफेसर वाणिज्य, किशोरी रमन पी जी कॉलेज, मथुरा (उत्तर प्रदेश)।

FREE SAMPLE

11. **डॉ. धीरज वर्मा (सोनी)**, प्राचार्य अमृतम शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, बटावदी, तहसील अंता, जिला बाराबंकी (उत्तर प्रदेश)।
12. **डॉ. अशोक कुमार**, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ, झारखण्ड।
13. **डॉ. आशीष श्रीवास्तव,** असिस्टेंट प्रोफेसर, आर0एस0वाय डिग्री कॉलेज, पूंछ झांसी (उत्तर प्रदेश)।
14. **अंचल सक्सेना**, उप प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय, कानपुर केंट, कानपुर (उत्तर प्रदेश)।
15. **अनिल कुमार हनुमानदास गुप्ता**, सहा. प्राध्यापक, समाजशास्त्र विभाग, जि.के कला व विज्ञान महिला महाविद्यालय, कावराबांध तह. सालेकसा जि. गोंदिया।
16. **अंकिता,** असिस्टेंट प्रोफेसर, डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, एसएसजे परिसर अल्मोड़ा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, उत्तराखण्ड।
17. **खेमेन्द्र कुमार शर्मा,** असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, एस0सी0 डी0 के0 खोला कॉलेज आफॅ एजुकेशन, उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)।
18. **श्रवण कुमार,** उपाध्याय, श्रीसन्देष, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)
19. **पारुल रानी**, ड्राइंग एंड पेंटिंग डिपार्टमेंट, एम०एम०एच० कॉलेज, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
20. **श्री मनोज जोशी,** सीनियर रिसर्च स्कॉलर, डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन, एसएसजे परिसर अल्मोड़ा, कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल, उत्तराखण्ड।
21. **रवीश कुमार**, शोध छात्र (शिक्षा छात्र), आईई एस ई डीम्ड विश्व विद्यालय, सरदारशहर, चूरू, राजस्थान।
22. **सन्दीप कुमार**, शोध छात्र (शिक्षा), आईई एस ई डीम्ड विश्व विद्यालय, सरदारशहर, चूरू, राजस्थान।

SAMPLE

23. **अनुराग तिवारी**, शोधार्थी, मालवीय शांति अनुसंधान केंद्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)।

24. **डॉ0 चन्दन कुमार,** सहायक प्राध्यापक पी.पी.यू., पटना एवं विधि शोधार्थी शारदा वि0 वि0 ग्रेटर नोएडा।

25. **डॉ. प्रवीण कुमार झा,** सहायक प्राध्यापक (अतिथि), इतिहास विभाग, राजेंद्र कॉलेज, छपरा।

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

विषय–सूची

	समर्पण	v
	सम्पादकीय	vii
	भूमिका	xi
	सहायक–सूची	xv
1.	संस्कृति के बारे में (भारतीय सन्दर्भ में) *—डॉ. धीरज सिंह*	1
2.	वर्तमान परिदृश्य में भारतीय संस्कृति और पर्यावरण (कोरोना के विशेष सन्दर्भ में) *—डॉ. अनामिका सिंह, डॉ. समता सिंह*	13
3.	विश्व शांति एवं कल्याण के संदर्भ में भारतीय संस्कृति की दिशा एवं दशा *—डॉ. रंजीत कुमार*	18
4.	भारतीय संस्कृति के घटते हुए मूल्यः एक विवेचना *—कुंवर कुलदीप चौहान, डॉ0 हरिशंकर सिंह*	30
5.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्राचीन भारतीय संस्कृति की उपयोगिता *—डॉ. अरूणा शर्मा*	40
6.	भारतीय दर्शनशास्त्र एवं भारतीय संस्कृति *—डॉ. चन्दन कुमार*	44
7.	देश के सामाजिक एवं बौद्धिक विकास में भारतीय संस्कृति और सामाजिक मूल्य का योगदान– एक समीक्षा *—डॉ. सुनीता साह*	49

SAMPLE

8. भारतीय संस्कृति में वर्णित महाभारत कालीन नारी की स्थिति 58
—*डॉ. बबिता सिंह*

9. भारतीय संस्कृति एवं उनके त्योहारों की महत्ता का अध्ययन 68
—*डॉ. नवीन अग्रवाल*

10. भारतीय संस्कृति–परिचय, विशेषता और महत्व 73
—*डॉ. धीरज वर्मा (सोनी)*

11. भारतीय संस्कृति : परिचय और विशेषताएं 83
—*डॉ. प्रवीण कुमार झा*

12. भारतीय संस्कृति और मूल्य (पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राष्ट्रीय आदि) 95
—*डॉ. अशोक कुमार*

13. भारत की संस्कृति पर पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव 105
—*डॉ. आशीष श्रीवास्तव*

14. भारतीय संस्कृति एवं विश्व बंधुत्व 112
—*अंचल सक्सेना*

15. भारतीय संस्कृति में त्योहारो का महत्व 120
—*अनिल कुमार, हनुमानदास गुप्ता*

16. भारतीय संस्कृति एवं तकनीकी प्रगति 133
—*अंकिता*

17. भारतीय संस्कृति एवं मानव मूल्य 142
—*खेमेन्द्र कुमार शर्मा*

18. पर्वो और व्रतों के आलोक में पर्यावरण संरक्षण 155
—*श्रवण कुमार उपाध्याय*

19. भारतीय संस्कृतिः एक परिचय 164
—*पारुल रानी*

SAMPLE

20. भारतीय संस्कृति को समृद्ध करने वाले तत्वः वैदिक शिक्षा पद्धति, धर्म, प्राचीन साहित्य आदि 173
—*श्री मनोज जोशी*

21. भारतीय संस्कृति और मूल्य (पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, राष्ट्रीय आदि) 184
—*रवीश कुमार*

22. भारतीय संस्कृति वैश्विक शांति के लिए एक सर्वकालिक प्रासंगिक आधार 194
—*सन्दीप कुमार*

23. भारतीय संस्कृतिः परिचय, विशेषता और महत्व 205
—*अनुराग तिवारी*

नमूना • SAMPLE